विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में मनाया गया भारतीय दार्शनिक दिवस

वैशाख शुक्ल पंचमी जो आदि शंकराचार्य जी की जयंती है, उसे अब भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर), नई दिल्ली, की पहल पर भारतीय दार्शनिक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में दिनांक 02 मई 2025 को दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में कार्यक्रम का आयोजन गया जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के अधिष्ठाता, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत थे। कार्यक्रम की समन्वयक विभाग की सहायक आचार्य डॉ. देवस्मिता चक्रबर्ती एवं डॉ. अर्चना वर्मा थीं।

कार्यक्रम की शुरुआत आदि शंकराचार्य एवं डॉक्टर सर हरीसिंह गौर के चित्र पर मल्यार्पण कर की गई। दर्शनशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार तिवारी एवं अधिष्ठाता प्रोफेसर डी. एस. राजपूत के साथ-साथ विभाग के शिक्षकों, छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों ने आदि शंकराचार्य के दार्शनिक अवदान पर अपने विचार रखे। स्वागत उद्बोधन देते हुए डॉ. देवस्मिता चक्रबर्ती ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य जनों का अभिवादन किया एवं शंकराचार्य के दार्शनिक उत्तराधिकार के एक कम चर्चित किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने शंकराचार्य द्वारा नैतिक अनुशासन, तर्कपूर्ण विचार, और सन्यास के जीवन के रूप में दर्शन पर बल दिया। तद्पश्चात आदि शंकराचार्य के जीवन पर एक वृत्तचित्र दिखाया गया। इस कार्यक्रम में दर्शन विभाग तथा अन्य विभागों से सम्मिलित छात्र-छात्राओं द्वारा शंकराचार्य के जीवन एवं दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर पोस्टर बनाए गए। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने शंकराचार्य के जीवन से जुड़े अनेक वृत्तांतों, जैसे -शास्त्रार्थ करना, प्रजलित प्रथाओं को तोड़ना, आदि का उल्लेख किया जिनसे उनकी तार्किकता व आध्यात्मिक क्रांति का परिचय मिलता है। उन्होंने आदि शंकराचार्य द्वारा रचित अनेक ग्रंथों का वर्णन किया और भारतीय संस्कृति में उनके योगदान पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर राजपूत ने अपने उद्बोधन में इस बात पर बल दिया कि हमें प्रयास करना चाहिए कि हम अपने भीतर शंकराचार्य और विवेकानंद आदि महापुरुषों को जीवित रखें। उनके अनुसार हमें शंकराचार्य की शिक्षा को अपने जीवन में उतारना चाहिए तभी उन पर किये गए कार्यक्रमों की सार्थकता है। दर्शन विभाग के शिक्षक डॉ. सत्यनारायण देवलिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रारम्भ वेद से है और इसका चरम वेदांत में देखने को मिलता है। उनके अनुसार आदि शंकराचार्य वेदांत में अद्वैत वेदांत के ध्वजवाहक हैं जिसमें समस्त प्राणियों की एकता का सूत्र समाहित है। विभाग के अन्य शिक्षक डॉ. नरेन्द्र कुमार बौद्ध ने शंकराचार्य के दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका दर्शन यह सिखाता है कि ब्रह्म केवल आपके प्रति मुझमे मानवता और मेरे प्रति आपमें मानवता है। ब्रह्म कोई वस्तु नहीं है, ये अनंत और गहरा है, इसमें किसी प्रकार का भेद नहीं है। उनके अनुसार ज्ञान की परिणति समाज के कल्याण में ही होनी चाहिए, अन्यथा अहंकार पैदा हो जाता है। शंकराचार्य ने अपने ज्ञान को समाज के कल्याण में लगाया। डॉ. अर्चना वर्मा ने आयोजन में सम्मिलित सभी आगंतुकों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह दिन भारत के महान विचारकों के योगदान को सम्मान देने का दिन है। उन्होंने शंकराचार्य के दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शंकराचार्य की गहन शिक्षाओं ने जीवन और सत्य के विषय में पीढ़ियों का मार्गदर्शन किया है।

कार्यक्रम में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी कराई गयी जसमें प्रथम स्थान पर दर्शन विभाग के स्नातकोत्तर के विद्यार्थी हेमंत तिवारी, दूसरे स्थान पर विभाग की शोधार्थी विभा पांडेय व तीसरे स्थान पर विभाग के विद्यार्थी वर्षा, रिषिका व सुशील रहे। कार्यक्रम में इतिहास विभाग से प्रो. बी. के. श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग से डॉ. दिव्या भनोट, दर्शन विभाग के शोधार्थी मनोहरलाल चौरसिया, विभा पाण्डेय, पूजा एवं गौरव कुमार के साथ-साथ स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विभाग के छात्र हिमांक चक्रबर्ती द्वारा किया गया।

भारतीय दार्शनिक दिवस, 02 मई 2025, दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारतीय दार्शनिक दिवस, 02 मई 2025, दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारतीय दार्शनिक दिवस, 02 मई 2025, दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में मनाया गया भारतीय दार्शनिक दिवस

आचरण संवाददाता

सागर। वैशाख शुक्ल पंचमी जो आदि शंकराचार्य जी की जयंती है, उसे अब भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर), नई दिल्ली, की पहल पर भारतीय दार्शनिक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में कार्यक्रम का आयोजन गया जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के अधिष्ठाता, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत थे। कार्यक्रम की समन्वयक विभाग की सहायक आचार्य डॉ. देवस्मिता चक्रबर्ती एवं डॉ. अर्चना वर्मा थीं। कार्यक्रम की शुरुआत आदि शंकराचार्य एवं डॉक्टर सर हरीसिंह गौर के चित्र पर मल्यार्पण कर की गई। दर्शनशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार तिवारी एवं अधिष्ठाता प्रोफेसर डी. एस. राजपूत के साथ-साथ विभाग के शिक्षकों, छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों ने आदि शंकराचार्य के दार्शनिक अवदान पर अपने विचार रखे। स्वागत उद्बोधन देते हुए डॉ. देवस्मिता चक्रबर्ती ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य जनों का अभिवादन किया एवं शंकराचार्य के दार्शनिक उत्तराधिकार के एक कम चर्चित किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने शंकराचार्य द्वारा नैतिक अनुशासन, तर्कपूर्ण विचार, और सन्यास के जीवन के रूप में दर्शन पर बल दिया। तद्पश्चात आदि शंकराचार्य के जीवन पर एक

वृत्तचित्र दिखाया गया। इस कार्यक्रम में दर्शन विभाग तथा अन्य विभागों से सम्मिलित छात्र-छात्राओं द्वारा शंकराचार्य के जीवन एवं दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर पोस्टर बनाए गए। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने शंकराचार्य के जीवन से जुड़े अनेक वृत्तांतों, जैसे -शास्त्रार्थ करना, प्रजलित प्रथाओं को तोड़ना, आदि का उल्लेख किया जिनसे उनकी तार्किकता व आध्यात्मिक क्रांति का परिचय मिलता है। उन्होंने आदि शंकराचार्य द्वारा रचित अनेक ग्रंथों का वर्णन किया और भारतीय संस्कृति में उनके योगदान पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर राजपूत ने अपने उद्बोधन में इस बात पर बल दिया कि हमें प्रयास करना चाहिए कि हम अपने भीतर शंकराचार्य और विवेकानंद आदि महापुरुषों को जीवित रखें। उनके अनुसार हमें शंकराचार्य की शिक्षा को अपने जीवन में उतारना चाहिए तभी उन पर किये गए कार्यक्रमों की सार्थकता है। दर्शन विभाग के शिक्षक डॉ. सत्यनारायण देवलिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रारम्भ वेद से है और इसका चरम वेदांत में देखने को मिलता है। उनके अनुसार आदि शंकराचार्य वेदांत में अद्वैत वेदांत के ध्वजवाहक हैं जिसमें समस्त प्राणियों की एकता का सूत्र समाहित है। विभाग के अन्य शिक्षक डॉ. नरेन्द्र कुमार बौद्ध ने शंकराचार्य के दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका दर्शन यह सिखाता है कि ब्रह्म केवल आपके प्रति मुझमे मानवता और मेरे प्रति आपमें मानवता है। ब्रह्म कोई वस्तु नहीं है, ये अनंत और गहरा है, इसमें किसी प्रकार का भेद नहीं है। उनके अनुसार ज्ञान की परिणति समाज के कल्याण में ही होनी चाहिए, अन्यथा अहंकार पैदा हो जाता है। शंकराचार्य ने अपने ज्ञान को समाज के कल्याण में लगाया। डॉ. अर्चना वर्मा ने आयोजन में सम्मिलित सभी आगंतुकों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह दिन भारत के महान विचारकों के योगदान को सम्मान देने का दिन है। उन्होंने शंकराचार्य के दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शंकराचार्य की गहन शिक्षाओं ने जीवन और सत्य के विषय में पीढ़ियों का मार्गदर्शन किया है।

कार्यक्रम में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी कराई गयी जसमें प्रथम स्थान पर दर्शन विभाग के स्नातकोत्तर के विद्यार्थी हेमंत तिवारी, दूसरे स्थान पर विभाग की शोधार्थी विभा पांडेय व तीसरे स्थान पर विभाग के विद्यार्थी वर्षा, रिषिका व सुशील रहे। कार्यक्रम में इतिहास विभाग से प्रो. बी. के. श्रीवास्तव, मनोविज्ञान विभाग से डॉ. दिव्या भनोट, दर्शन विभाग के शोधार्थी मनोहरलाल चौरसिया, विभा पाण्डेय, पूजा एवं गौरव कुमार के साथ-साथ स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विभाग के छात्र हिमांक चक्रबर्ती द्वारा किया गया।

भारतीय दार्शनिक दिवस, 02 मई 2025, दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र विभाग में मनाया भारतीय दार्शनिक दिवस

सागर दिनकर

सागर। वैशाख शुक्ल पंचमी जो आदि शंकराचार्य जी की जयंती है, उसे अब भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर), नई दिल्ली, की पहल पर भारतीय दार्शनिक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में 2 मई को दर्शन शास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, में कार्यक्रम का आयोजन गया।

जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के मानव की एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययन शाला के अधिष्ठाता, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत थे। कार्यक्रम की समन्वयक विभाग की सहायक आचार्य डॉ. देव स्मिता चक्रबर्ती एवं डॉ. अर्चना वर्मा थीं।

कार्यक्रम कीशुरुआत आदि शंकराचार्य एवंडॉक्टर सर हरीसिंह गौर के चित्र पर मल्यार्पण कर की गई। दर्शन शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार तिवारी एवं अधिष्ठाता प्रोफेसर डी. एस. राजपूत के साथ-साथ विभाग के शिक्षकों, छात्र-छात्राओं एवं शोधार्थियों ने आदि शंकराचार्य के दार्शनिक अवदान पर अपने विचार रखे। स्वागत उद्बोधन देते हुए डॉ. देवस्मिता चक्रबर्ती ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य जनों का अभिवादन किया एवं शंकराचार्य के दार्शनिक उत्तराधिकार के एक कम चर्चित किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष की ओर ध्यान आकर्शित किया। उन्होंने शंकराचार्य द्वारा नैतिक अनुशासन, तर्कपूर्ण विचार, और सन्यास के जीवन के रूप में दर्शन पर बल दिया। तद्पश्चात आदिशंकराचार्य के जीवन पर एक वृत्तचित्र दिखाया गया। इस कार्यक्रम में दर्शन विभाग तथा अन्य विभागों से सम्मिलित छात्र-छात्राओं द्वारा शंकराचार्य के जीवन एवं दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर पोस्टर बनाए गए। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने शंकराचार्य के जीवन से जुड़े अनेक वृत्तांतों, जैसे - शास्त्रार्थ करना, प्रजलित प्रथाओं को तोड़ना, आदिका उल्लेख किया जिनसे उनकी तार्किकता व आध्यात्मिक क्रांति का परिचय मिलता है। उन्होंने आदि शंकराचार्य द्वारा रचित अनेक ग्रंथों का वर्णन किया और भारतीय संस्कृति में उनके योगदान पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर राजपूत ने अपने उद्बोधन में इस बात पर बल दिया कि हमें प्रयास करना चाहिए कि हम अपने भीतर शंकराचार्य और विवेकानंद आदि महापुरुषों को जीवित रखें। उनके अनुसार हमें शंकराचार्य की शिक्षा कोअपने जीवन में उतारना चाहिए तभी उन पर किये गए कार्यक्रमों की सार्थकता है। दर्शन विभाग के शिक्षक डॉ. सत्यनारायण देवलिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रारम्भ वेद से है और इसका चरम वेदांत में देखने को मिलता है। उनके अनुसार आदि शंकराचार्य वेदांत में अद्वैत वेदांत के ध्वज वाहक हैं जिसमें समस्त प्राणियों की एकता का सूत्र समाहित है। विभाग

भारतीय दार्शनिक दिवस, 02 मई 2025, दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)